International Journal of Applied Research 2018; 4(10): 476-479

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(10): 476-479
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2018
Accepted: 23-09-2018

डॉ0 शशिकिरण सिंह
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0 कालेज, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 शशिकिरण सिंह
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0 कालेज, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

मेरी तिब्बत यात्राः राहुल सांकृत्यायन

डॉ0 शशिकिरण सिंह

प्रस्तावना

राहुल सांकृत्यायन जी का जन्म 9 अप्रैल 1893 को ग्राम–पन्दहा, जिला आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोवर्धन पाण्डे और माता का नाम श्रीमती कुलवन्ती था। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। इनके बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। सन् 1930 में ये श्री लंका में बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए और इनको 'राहुल' नाम मिला। ये दामोदर स्वामी के नाम से भी जाने जाते थे। पितृकुल के 'सांकृत्य' गोत्रीय होने के कारण ये अपने नाम के आगे सांकृत्यायन लिखने लगे।

राहुल जी का पूरा जीवन यायावरी में बीता। पहली यात्रा वाराणसी तक, दूसरी कलकत्ता और तीसरी पुनः कलकत्ता तक की हुई। इसके बाद वे हिमालय की ओर चले गये और वहॉ काफी समय व्यतीत किया। इन्होंने वाराणसी में संस्कृत का अध्ययन किया। इनको वहॉ परसा महन्त का साहचर्य प्राप्त हुआ । इन्होने आगरा में भी पढ़ाई की । लाहौर जाकर मिशनरी कार्य किया तथा कुर्ग में भी ये चार महीने रहे। 1921 से 27 तक इन्होंने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में कार्य किया। छपरा जाकर वहॉ के बाढ़–पीड़ितों की सहायता की। स्वतंन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। सत्याग्रह करने के दौरान उनको जेल में भी छः महीने तक रहना पड़ा। वे जिला कांग्रेस के मंत्री रहे। ये नेपाल में डेढ़ मास के प्रवास पर रहे। हजारी बाग जेल में भी कुछ समय इन्होंने कारावास की सजा काटी। कौंसिल का चुनाव भी इन्होंने लड़ा। लंका में राहुल जीने 19 मास प्रवास में व्यतीत किए और ये नेपाल में अज्ञातवास में रहे। सवा वर्ष तक तिब्बत में रहे और इसके पश्चात् दूसरी बार लंका गये। सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के लिए ये भारत आये और पुनः कुछ समय बाद तीसरी बार लंका के लिए प्रस्थान किया। राहुल सांकृत्यायन ने इंग्लैण्ड और यूरोप की यात्राऍ की। ये लद्दाख, तिब्बत जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत भूमि, ईरान, आदि देशों में भी गए।

इन्होने किसान–मजदूरों के आन्दोलन में भी भाग लिया और सत्याग्रह तथा भूख हड़ताल में सम्मिलित रहे। इन्होंने बाद में कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली और ये रूस चले गये। ये चीन भी गये थे।

राहुल जी अदभुत व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे अत्यन्त मेधावी थे। कक्षा में सदैव उनको प्रथम स्थान प्राप्त होता था। संस्कृत भाषा को जानने के लिए उन्होंने बनारस जाकर उसका गहन अध्ययन किया और संस्कृत साहित्य, व्याकरण तथा दर्शन पर उनकी गहन पकड़ थी। उनकी विद्वता और तर्कशक्ति से प्रभावित होकर बनारस के पण्डितों ने उन्हें महापंडित की उपाधि से अलंकृत किया। बाद में जब बौद्ध धर्म की ओर उनका झुकाव हुआ तो उन्होंने प्राकृत, पालि आदि का भी अध्ययन किया। कलकत्ता जब वे गये तो अंग्रेजी भाषा और साहित्य में दक्षता प्राप्त की। वे जहॉ– जहॉ गये, वहॉ की भाषा को सीखने में उन्होंने देर नहीं की। ज्ञान की तीव्र पिपासा भी उनकी यात्राओं का कारण थी। वे जहॉ भी गये, उन्होंने वहॉ की भाषा, संस्कृति, सभ्यता' सबका गहन अध्ययन किया।

उनके यात्रा वृतान्तों में उनकी इस प्रवृत्ति के सर्वत्र दर्शन होते हैं।
साहित्य और साहित्य से इतर दर्शन, राजनीति, धर्म, इतिहास आदि पर उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों की संख्या 150 के लगभग है।

कथा–साहित्यः

सतमी के बच्चे
बोल्गा से गंगा
बहुरंगी मधुपुरी
कनैला की कपा

उपन्यासः

बाईसवीं सदी
जीने के लिए
सिंह सेनापति
जय यौधेय
भागों नहीं दुनियॉ को बदलों
मधुर स्वप्न
राजस्थानी रनिवास
विस्मृत यात्री
दिवोदास

आत्म कथा

मेरी जीवन यात्रा
जीवनी या संस्मरणः
सरदार पृथ्वी सिंह
नए भारत के नए नेता
बचपन की स्मृतियॉ
अतीत से वर्तमान
स्तालिन
लेनिन
कार्ल मार्क्स
माओ–त्से–तुंग
वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली
सिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन
कप्तान लाल
सिंहल के वीर पुरूष
महामानव बुद्ध
घुमक्कड़ स्वामी
मेरे असहयोग के साथी
जिनका मैं कृतज्ञ
यात्रा साहित्यः
लंका
जापान
ईरान
किन्नर देश की ओर
चीन में क्या देखा
मेरी लद्दाख यात्रा
तिब्बत में सवा वर्ष
रूस में पच्चीस मास
अनुवाद
मज्झिम निकाय– हिन्दी
दीर्घ निकाय–''
संयुक्त निकाय–''

निबंध!

ऋग्वैदिक आर्य
दर्शन–दिग्दर्शन

तुम्हारी क्षय–भारतीय जाति व्यवस्था, चाल–चलन पर व्यंग मध्य एशिया का इतिहास दक्खिनी हिन्दी का व्याकरण

भोजपुरी साहित्य

भिखारी ठाकुर यात्रा– साहित्य के जनक के रूप में राहुल सांकृत्यायन जाने जाते हैं। उनका यात्रा–साहित्य के लेखन में अति महत्वपूर्ण स्थान है। 'मेरी तिब्बत यात्रा' उनके द्वारा लिखा गया यात्रा वृतान्त है जिसमें उन्होंने तिब्बत के प्राकृतिक सौंदर्य, वहॉ की पर्वत उपत्यकाओं, मैदानों, चैत्यों, विहारों, मठों, रास्तों, दर्रोः घाटियों, वनस्पतियों का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। वे मुख्यतः वहॉ बौद्ध धर्म के प्राचीन ग्रन्थों की खोज में गये थे जो वहॉ के मठों में रखे थे। उन्होंने उन ग्रन्थों का अध्ययन और हिन्दी अनुवाद किया। वे तिब्बत के भिन्न–भिन्न भागों में इन ग्रन्थों की तलाश में गये और इसी क्रम में उन्होंने अपने उस समय के प्रवास के अनुभवों को इस कृति में लिपिबद्ध किया है। तिब्बत प्रदेश की भाषा, वहॉ की सभ्यता–संस्कृति, जीवन–शैली आदि की विस्तृत जानकारी हमें इस ग्रन्थ से प्राप्त होती है। इसमें कुल पॉच अध्याय हैं–

1. ल्हासा की ओर
2. चाड़ की ओर,
3. सक्य की ओर,
4. ञेनम, की ओर और
5. नेपाल की ओर।

पुस्तक में तिब्बती लोगों, मठों, पुस्तकों, धर्मगुरूओं राणा शम्सेर आदि के कई चित्र भी हैं। पुस्तक में कुल 197 पृष्ठ हैं।

लहासा से उत्तर की ओर

यह पुस्तक का पहला अध्याय है जो पत्रशैली में 1934 में आनन्द नामक व्यक्ति को लिखा गया है। कलिंगपोंग से ल्हासा तक का पुराना रास्ता उन्होंने तय किया। विनयपिटक का अनुवाद किया। तिब्बती भाषा के अन्य ग्रन्थ भी उन्होंने यहॉ लिखे। तिब्बत यात्रा के अपने अनुभवों को उन्होंने छपने के लिए पत्रिका में भेजा। दीपंकर के शिष्य की चर्चा भी उन्होंने की है जो तंत्र–मंत्र के विरोधी थे। वे भोट सरकार की आज्ञा

लेकर वहॉ प्राचीन ग्रन्थों की खोज में गये। साथी के रूप में लक्ष्मीरत्न और इन्छी–मिन्छी सोनम–गंल–मन्छन, गेम–दुन–छो–फेल (चित्रकार) चार साथी और छः खच्चर लेकर चले। वहॉ स्थित नालन्दा का भ्रमण किया औरा उसमें रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं तथा छात्रों और पुस्तकों का वर्णन है। तिब्बत प्रदेश में पानी से बनने वाली बिजली का भी इसमें वर्णन है। इस प्रदेश की भेड़ और चमरियॉ भी रास्ते में उनको दिखाई देती हैं।

चाड़ की ओर

यहॉ राहुल जी को एक मठ में विक्रम–शिला विश्वविद्यालय के प्रख्यात आचार्य श्री भद्र के चीवर (बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र) एक पैर का जूता तथा कुछ सुन्दर भारतीय चित्र और तिब्बत के बने चित्र प्राप्त हुए। वे मुख्यतः यहॉ प्रमाण वार्तिक नामक पुस्तक के मूलरूप को ढूँढने आये थे जो उन्हें नहीं मिली । यहॉ स्थित कई प्रसिद्ध मठों और विहारों के दर्शन कर और वहॉ स्थित बुद्ध की प्राचीन पीतल की मूर्तियों के दर्शन कर और चित्र लेकर वे सक्य की ओर रवाना हुए।

सक्य की ओर

यहॉ के एक मठ में लेखक को बहुत सी महत्वपूर्ण पुस्तकें मिलीं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक धर्म कीर्ति की वाद–न्याय थी जिसकी टीका उन्हें लंका में मिली थी।

यहॉ प्राप्त महत्वपूर्ण पुस्तकें थीं

1. वाद–न्याय
2. वाद रहस्य
3. अभिधर्म कोश मूल (अपूर्ण)
4. सुभाषित रत्न कोष (भीमार्जुनसोम)
5. अमरकोश कामधेनु टीका
6. न्याय बिन्दु अनु टीका (धर्मोन्तर की टीका पर दुर्ब्बक मिश्र कृत)
7. हेतु विन्दु अनु टीका' (धर्मोन्तर की टीका पर दुर्ब्बक मिश्र कृत)
8. प्रतिमोक्ष सूत्र (लोकोत्तर वादी)
9. मध्यान्तविभंग भाष्य
10. अभिधर्म समुच्चय भाष्य

यहीं से उन्हें प्रमाणवार्तिक का महाभाष्य वार्तिकालंकार प्राप्त हुआ। जिससे राहुल जी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उन्होंने उस ग्रन्थ को पूरा लिख लिया । यहीं उन्हें श्रीमती दीर्घायु श्री और उनके पति मिले जिन्होंने राहुल जी की अच्छी आव–भगत की। यहॉ उन्हें तेरह मूर्तियॉ और एक ताल पत्र की पुस्तक भी मिली।

ञेनम् की ओर

यहॉ पहुँचते–पहुँचते नवम्बर का महीना आ गया। इस प्रदेश में बर्फ पड़ने के कारण ठंड बढ़ गई थी और बरसात हो जाने के कारण रास्ते भी फिसलन से भर गये थे। लेखक के सामान ढोने वाले पीछे रह गए थे जिससे उन्हें इस ठंड में मांगकर ओढ़ने–बिछाने के सामान की व्यवस्था करनी पड़ी। वे नेपाल के एक व्यापारी के आश्रय में रहे और व्यवस्था हो जाने पर नेपाल की ओर चल दिए।

नेपाल की ओर

नेपाल पहुँचने पर राहुल जी को हाल ही में आये भूकम्प से क्षति ग्रस्त मकान दिखाई दिए जो भूकम्प के ग्यारह महीने बाद भी निर्मित नहीं किए जा सके थे। वे कहते हैं कि भूकम्प–क्षेत्र में लकड़ी के मकान अधिक उपयुक्त होते हैं क्योंकि उनको फिर से बनाने में आसानी होती है किन्तु लोग फिर भी ईटों के ही मकान बना रहे थे। काठमांडू में वे धर्ममान साहू के मकान में रहे जो वहॉ के प्रसिद्ध धनपति थे। वहॉ वे नेपाल के राजगुरू श्री हेमराज शर्मा से मिले जो संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। वे विद्वता के साथ विनम्रता की भी मूर्ति थे। यहॉ उन्हें प्रमाणवार्तिक के 41 पन्ने मिले। पाटन के बौद्ध–विहार में अनेक प्राचीन पुस्तकें थीं जो इस भूकम्प में समाप्त हो गयीं थीं। राजगुरू के पुस्तकालय से उन्हें तिल्लो पा का दोहा कोश मिला। सरकारी पुस्तकालय से सरहपा का दोहा कोश मिला। वहॉ के शिक्षा विभाग के डायरेक्टर जनरल मृगेन्द्र शम्सेर एम0ए0 के पुस्तकालय में भी वे गये जो वहॉ के पररष्ट्र मंत्री भी थे और राजघराने से संबंधित थे। उस पुस्तकालय में उन्हें विदेशी विद्वानों की जीवनियॉ मिलीं। लेखक द्वारा संग्रहीत वस्तुओं को नेपाल से बाहर ले जाने की अनुमति भी शम्सेर राणा द्वारा दिलाई गयी। अन्ततः अनेक बाधाओं और लगातार ज्वर की स्थिति रहने पर भी वे 5 दिसम्बर 1934 को पटना पहुँचे। इस यात्रा में विपरीत परिस्थितियों और स्वास्थ्य खराब होने के कारण उनका वजन 40 पौण्ड घट गया था ।

परिशिष्ट

राहुल जी ने परिशिष्ट में भोटिया लोगों की विशेषताओं का उद्घाटन किया है। वे पीने और नाच के बहुत शौकीन होते हैं। वहॉ जुआधर का भी प्रचलन था । गेहूँ, जौ, धान आदि की फसलें वहॉ उगाई जाती थीं। स्त्रियॉ घर और बाहर का हर कार्य करते हुए कोई–न कोई गीत गाती थीं जो उनके श्रम का परिहार करते थे और उनकी संगीत–प्रियता के परिचायक भी थें।

राहुल जी की यह यात्रा मुख्यतः बौद्धधर्म की प्राचीन ज्ञान सम्पदा की खोज के लिए थी तथापि यात्रा के मार्ग में आनेवाले सुन्दर और मनोहरी प्राकृतिक वैभव के दिग्दर्शन भी यहॉ होते हैं। उनके साहित्यिक और सौन्दर्य प्रेमी पक्ष का उद्घाटन, उनके प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन में हुआ है। मार्ग की कठिनाइयॉ और विषम परिस्थितियॉ उनके 'यायावर' मन को विचलित करने में सफल नहीं होतीं । उनकी जिज्ञासु वृत्ति उन्हें एक स्थान पर अधिक देर टिकने नहीं देती। वे निरन्तर एक

स्थान से दूसरे स्थान पर जहॉ भी उन्हें उनकी ज्ञान पिपासा और यायावरी वृत्ति ले गयीं वहॉ विपरीत परिस्थितियों में भी गये। केवल प्राचीन पुस्तकों के रूप में मिलने वाले ज्ञान के भण्डार का ही उन्होंने संकलन नहीं किया वरन् मूर्तियों, चित्रों, आभूषणों आदि का भी उन्होंने चित्र खींचकर या बनवाकर संग्रह किया जो उन स्थानों और वहॉ की सभ्यता पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

संदर्भ सूची

1. राहुल सांकृत्यायनः मेरी तिब्बत यात्रा
2. डा0 नगेन्द्रः हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. डा0 गणपतिचन्द्र गुप्तः हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास
4. डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदीः हिन्दी साहित्य की भूमिका